जयशंकर प्रसाद की कहानी कला

हिन्दी प्रतिष्ठा ।।।

प्रोफ़ेसर- रौशन कुमार

जनता कोशी महाविद्यालय बिरौल

प्रेमचंद युग के एक प्रतिभाशाली कथाकार के रूप में श्री जयशंकर प्रसाद का नाम लिया जाता है। उनके पांच कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं जिनके नाम है छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी और इंद्रजाल। कुल मिलाकर 69 कहानियां इन संकलन में संकलित की गई है। उनकी कहानियों में अनुभूति की तीव्रता, काव्यात्मकता, प्रेम चित्रण, प्रकृति निरूपण एवं कल्पना की प्रचुरता विद्यमान है। उनकी कुछ कहानियों में ऐतिहासिक, देशकाल एवं वातावरण की सफल प्रस्तुति की गई है। अजित गौरव स्वप्निल भा गुप्ता एवं कल्पना की ऊंची उड़ान उनकी कहानियों की विशेषता मानी जाती है। प्रेम करुणा त्याग बलिदान इनकी कहानियों के विषय है। उन्होंने उच्च कोटि के नारी चरित्र अपनी कहानियों में प्रस्तुत किए हैं जो अपने निश्छल प्रेम बलिदान और त्याग से पाठकों

पर अमित छाप छोड़ते हैं। प्रसाद की प्रमुख कहानियां है पुरस्कार, इंद्रजाल, आकाशदीप, ममता, मधुवा ,देवरथी, बेरी ,प्रतिध्वनि ,आंधी ,सालावती आदि। प्रसाद जी की पहली कहानी ग्राम सन 1911 ईस्वी में इंदु में प्रकाशित हुई थी। उनकी कहानियों के कथानक प्रागैतिहासिक काल ,वैदिक काल ,उत्तर वैदिक काल तथा तत्कालीन समाज की समस्याओं से जुड़े हुए हैं। भले ही उनकी कहानियों के पात्र एवं घटनाएं ऐतिहासिक न हो परंतु देश काल एवं वातावरण का चित्रण इस प्रकार करते हैं की कहानी में ऐतिहासिकता आ जाती है। कहानियों में प्रस्तुत सामाजिक मान्यताएं धार्मिक मान्यताएं ,राजनीतिक विचारधारा एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण प्रसाद जी हिन्दी के विशिष्ट कथाकार बन गए हैं। प्रसाद जी ने अतीत के जीवन मूल्यों का समर्थन किया तथा त्याग बलिदान से युक्त पात्रों के चरित्र को उजागर करने में विशेषज्ञता प्राप्त कर ली। उनकी कहानियां निश्चय ही आदर्शवाद का समर्थन करती है। पुरस्कार कहानी में नायिका मधुलिका राष्ट्र की रक्षा करने के लिए अपने व्यक्तिगत प्रेम को तिलांजलि दे देती है। इसके माध्यम से यह संदेश देना चाहते थे कि राष्ट्रहित के लिए व्यक्तिगत प्रेम का बलिदान करना पड़े तो व्यक्ति को इसके लिए तैयार रहना चाहिए ।प्रसाद की कहानियों की भाषा संस्कृत शब्दावली से युक्त होती थी। अलंकार एवं काव्यात्मकता का समावेश होता था। भाषा में पात्राअनुकूलता

एवं अर्थ व्यंजना पर उनका विशेष ध्यान केंद्रित रहता था उनकी कहानियों में प्रयुक्त भाषा का एक उदाहरण दृष्टव्य है। शीतकाल की रजनी ।मेघों से भरा आकाश ।जिसमें बिजली की दौड़-धूप। मधुलिका का छाजन टपक रहा था उड़ने की कमी थी वह ठिठुर कर एक कोने में बैठी थी। भाषा के माध्यम से देश काल एवं वातावरण को प्रस्तुत कर देने में वह सिद्धहस्त थे। पुरस्कार कहानी का एक दृश्य देखिए कौशल का वह उत्सव प्रसिद्ध था 1 दिन के लिए महाराज को कृषक बनना पड़ता था । उस दिन इन्द्र पूजा की धूमधाम होती थी। नगर निवासी पहाड़ी भूमि में आनंद मनाते। प्रतिवर्ष कृषि का यह महोत्सव उत्साह से संपन्न होता दूसरे राज्यों से भी युवक राजकुमार इस उत्सव में बड़े चाव से आकर योग देते।प्रसाद की कहानियां ,शैली, शिल्प, भाषा, विषय वस्तु आदि के कारण अपने समय की अन्य कहानियों से बिल्कुल अलग थी। इसलिए उन जैसे अनेक कहानी कारों की कहानियों को प्रसाद संस्थान की कहानी कहा गया उनका स्वर सरस्वती में छपने वाली कहानियों से नितांत भिन्न था। प्रसाद की कहानियां सोदेस्य होती थी । प्रयः त्याग,बलिदान ,राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत प्रसाद की कहानियां आदर्शवादी होती थी। तथा उनके उद्देश्य पाठकों को संदेश देना होता था . अपने नवीन शैली, शिल्प भव्यता ,भाषा एवं देशकाल के कारण प्रसाद जी हिन्दी के अप्रतिम कहानीकार के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत है।